IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वन संसाधन, प्रबंधन एवं पर्यावरण संरक्षण एक भौगोलिक अध्ययन

(बालाघाट जिले के विषेष संदर्भ में)

मीना ठाकरे

सहायक प्राध्यापक(भूगोल)

षा. महाविद्यालय बिछुआ

छिंदवाड़ा (म.प्र)

षोध सारांष :

भारत के ह्रदय स्थल के रूप में स्थित मध्यप्रदेष प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता विषेषकर वन एवं वन्यप्राणियों की विविधता के लिए जाना जाता है। वहीं मध्यप्रदेष राज्य का बालाघाट जिला प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण जिला है। इस जिले के 52% भाग में घने वन है,जो कि उष्ण कटिबंधीय अद्ध पर्णपाती वन है। ये वन 100 सेंटीमीटर वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाते है। बालाघाट के अलावा सीधी, षहडोल, जिलों में भी इन वनों का विस्तार है।इन वनों में बीना धारा, जामुन, महुआ, सेजा, हर्रा, तिन्सा आदि के अतिरिक्त सागौन, साल, नीम, आदि की भी बहुलता है। राष्ट्रीय वन विभागा ने अनुसरण में जनभागीदारी सुनियिचत करने के लिए वन विभाग ने ''संयुक्त वन प्रबंधन'',वन सुरक्षा समिति,ग्राम वन समिति,इको विकास समिति आदि की अवधारणा को अंगीकार किया है। बालाघाट जिले के सभी विकासखंड में पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए आठ साल से रक्षा सूत्र बांधकर पौधा रोपण कार्यक्रम अभियान चलाकर लोगों को इसके प्रति जागरूक किया जा रहा है।

पारिभाषिक षब्दावली–संसाधन, पर्यावरण, उष्ण कटिबंधीय।

प्रस्तावना–प्रकृति ने मानव को अनेक संसाधन दिये है। प्रकृति प्रदत्त इन संसाधनों में जैवीय संसाधनों को विषेष महत्व प्राप्त है। मावन जीवन का आस्त्वि जैविय संसाधनों पर आधारित है, क्योंकि मानव समाज अपनी विविध आवष्यकताओं की आपूर्ति के लिए इन्ही जैविय संसाधनों का उपयोग करता है। जैवीय संसाधन थल एवं जल दोनों ही स्त्रोतों से प्राप्त होते है। वहीं प्राकुतिक वनस्पति और जीव जंतुओं को स्थलीय संसाधनों में सम्मिलित किया जाता है। प्राकृतिक वनस्पति का स्थलीय

संसाधनों में सर्वाधिक महत्व है। प्राकृतिक वनस्पति एक महत्वपूर्ण संसाधन होने के साथ ही वातावरण की प्रत्यक्ष सूचक होती है। किसी प्राकृतिक वातावरण का उपयोग किस तरह से किया जा सकता है, इसका भी अनुमान प्राकृतिक वनों से लगाया जा सकता है। यह मानव के लिए प्रकृति का अनुपम उपहार है। प्राकृतिक वनस्पति का संसाधन के रूप में प्रयोग आदिकाल में षुरू हो गया था। प्राकृतिक वनस्पति का दूसरा अंग घास, आज के विकसित पषुपालन उघोग का सबसे बडा आधार है। इसी प्रकार किसी भी देष की अर्थव्यवस्था पर वहां की प्राकृतिक वनस्पति का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है । बालाघाट जिले में भी दूसरे जिलों की तुलना में सघन वन क्षेत्र है । यहां 1334 वर्ग किलो मीटर सघन वन क्षेत्र है। मध्यप्रदेष के चार वन मंडल भी बालाघाट जिले में है। बालाघाट जिले की अपार वन संपदा का प्रबंधन व संरक्षण भी सतत् विकास के संकल्प को ध्यान में रख कर किया जा रहा है।

अध्ययन का क्षेत्र–प्रस्तुत षोध का अध्ययन क्षेत्र बालाघाट जिलें में वनों की स्थिति, वन संसाधन, वनों का प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण का भौगोलिक विष्लेषण पर केन्द्रित है।

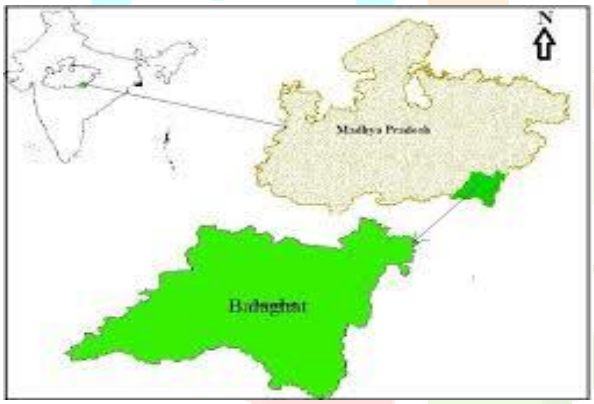

अध्ययन के उद्देष्य–1. प्रस्तुत षोध पत्र का उद्देष्य वन संसाधनों का दोहन इस प्रकार करना होगा जो पर्यावरण एवं विकास दोनों के हित में हो।

2. जब पर्यावरण और वन संरक्षित किए जाये तब उसके सुनियोजित उपयोग का लाभ स्थानीय निवासियों को मिलना चाहिए।

3. ग्रामीण जनता को वन संपदा तथा वनोपज से आर्थिक लाभ पहुचाना।

4. संसाधनों का न्यायोचित उपयोग सुनिष्चित करना ताकि वे वर्तमान के साथ–साथ भावी पीढ़ियो की आवयष्कताओं की भी पूर्ति कर सके।

5. स्थानीय लोगों की जैव विविधता संरक्षण की पंरपरागत विधियों की रक्षा करना।

6. वनों की कटाई जंहा तक संभव हो रोका जाना चाहिए।

7. संकटग्रस्त पर्यावरणीय संसाधनों का संरक्षण करना।

आंकड़ो का संकलन– प्रस्तुत षोध पत्र द्वितीयक आंकडों पर आधारित है। पुस्तकालय अध्ययन ,इंटरनेट, समाचार पत्र–पत्रिकाओं , भारत सरकार के विभिन्न संस्थानों के प्रकाषन, प्रदेष सरकार के प्रकाषन द्वारा आंकडे प्राप्त कर इस षोध पत्र को तथ्य परख बनाया गया है।

षोध प्रविधि– षोध पत्र में ग्रंथालय अध्ययन पद्धति का उपयोग किया गया है।

विष्लेषण– वन संसाधन प्राकृतिक वनस्पति में वृक्ष, झाडियां और घास के मैदान आते है। यह संसाधन सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि मावन के प्रमुख आवष्यकताओं की पूर्ती और उसके वातावरण की उपयोगिता इसी संसाधन पर निर्भर करती है। वन सम्पदा की दृष्टि से मध्यप्रदेष एक समृद्ध राज्य है, और इसी राज्य के बालाघाट जिले में सर्वाधिक 52% वन पाये जाते है। ये वन भौगोलिक वितरण की दृष्टि से उष्ण कटिबंधीय वन की श्रेणी में आते है। ये वन चौडी पत्ती वाले पतझड़ वन होते है । इन वनों में उष्ण कटिबंधीय आर्द्रवन भी पाये जाते है। चूंकि बालाघाट जिला जलवायु वर्गीकरण की दृष्टि से 200 सेमी से अधिक वर्षा, उच्च तापमान, उच्च आर्द्रता वाले प्रदेष में आता है। इस कारण यहां वृक्ष वर्ष भर हरे– भरे रहतें है। बालाघाट जिले के बैहर और परसवाडा विकासखंड में इन वनों की प्रधानता हैं। बालाघाट जिले के उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु वाले ऐसे क्षेत्र जहां वार्षिक वर्षा 100 से.मी से 200 से.मी के बीच है वहां चौडी पत्ती वाले साल सागौन,ताड,षीसम, बांस,आम,जामुन,बरगद,तथा नीम मुख्य वृक्ष है। ये वन आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। गौण वनों के अन्तर्गत खैर वृक्ष ,लाख,हर्रा, तेंदूपत्ता ,गोंद, बबूल , धावडा आदि आते है।

वनों से प्रत्यक्ष लाभ– भोजन, वस्त्र, औघोगिक कच्चा माल, जडी –बूटियां, ईंधन के लिए लकडी, पषुओं के लिए चारा, तथा वनों से असंख्य लोगो को रोजगार व आजीविका प्राप्त होती है। लकडी काटने, लकडी चीरने व वन आधारित उघोगों से लाखों लोगों को रोजगार मिलता है।

वनों से अप्रत्यक्ष लाभ–मृदा अपरदन पर नियंत्रण ,बाढ़ों की रोकथाम ,मरूस्थल के प्रसार पर नियंत्रण, मिटटी की उर्वरता को बढ़ाना अप्रत्यक्ष लाभ है। वनों में निवास करने वाली आदिम जातियां भी अपने जीवन निर्वाह के लिए वनों से वस्तुएं एकत्र करती है।

वन प्रबंधन–बालाघाट जिले में वन प्रबंधन हेतु कार्य आयोजन की क्षेत्रीय इकाईयां निरंतर काम कर रही है। जिसमें दक्षिण बालाघाट क्षेत्रीय इकाई है। जिसके अन्तर्गत वन सुरक्षा समिति, ग्राम वन समिति, ईको विकास समिति काम करती है। बालाघाट जिले में ग्राम वन समिति द्वारा 08 गांवों के आदिवासियों ने 500 एकड क्षेत्र में जंगल तैयार कर दिया है। बिगडे वन क्षेत्र में वन खंड सीमा से 05 किलोमीटर दूरी तक आने वाली समितियों को ग्राम वन समिति कहा जाता है और ग्राम वन समिति के सदस्य जिले में जैविक दबाव के कारण विरल वनों को सघन करने का काम करते है। बालाघाट जिले में भी राष्ट्रीय वन

नीति के अनुसरण में जनभागीदारी को सुनिष्चित करने के लिए वन विभाग ने संयुक्त वन प्रबंधन की अवधारणा को स्वीकार किया हैं। जिसके तहत् ग्रामीण आदिवासी जनों द्वारा वनों के प्रबधनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है।

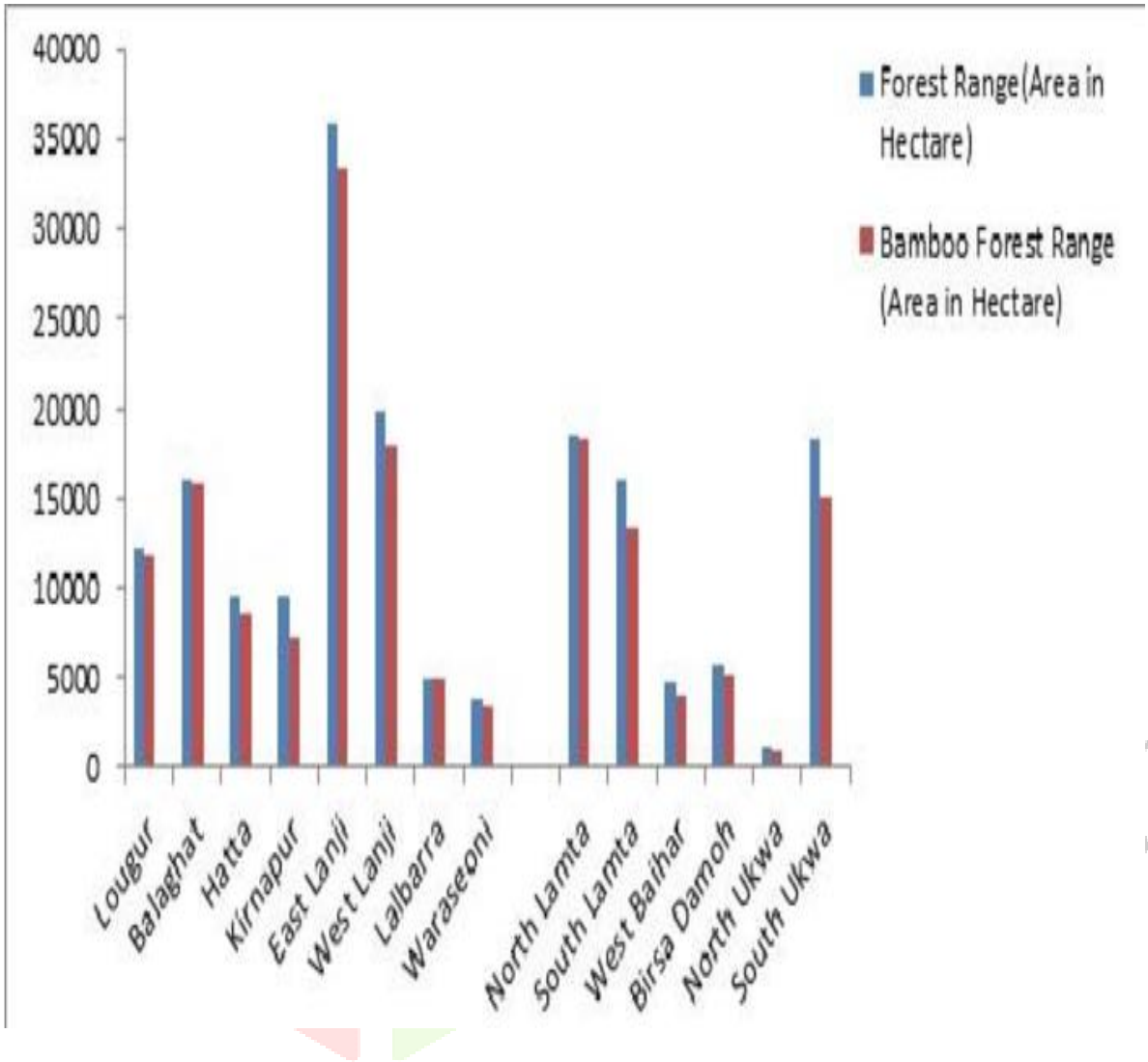

चित्रः कुल वन क्षेत्र व उसके अंदर षुद्ध बांस क्षेत्र (जिला बालाघाट)

पर्यावरण संरक्षण की गतिविधियां–वनों पर बढते जैविक दबाव, बढती जनंसख्या तथा कृषि हेतु जमीन की बढती आवष्यकता के कारण वन क्षेत्रों में अतिक्रमण एक गंभीर समस्या है। वर्तमान में संगठित एवं हिसंक अतिक्रमण के प्रयास भी हो रहे है। कई अषासकीय संगठनों द्वारा भी वन क्षेत्र में अतिक्रमण को प्रोत्साहित करतें की घटनाएं भी प्रकाष में आई है। इन्ही घटनाओं को देखते हुए जनभागीदारी एवं क्षेत्रीय इकाईयों की सक्रियता से वन अपराधों पर नियंत्रण के लगातार प्रयास किए जा रहे है। पिछले कुछ वर्षो से अवैध कटाई के प्रकरण, अवैध चराई के प्रकरण , अवैध परिवहन के प्रकरण ,अतिक्रमण, अवैध खनन जैसे अपराध कम हुए है। वन सुरक्षा की सुनवाई हेतु इंटरनेट आधारित वन अपराध प्रबंधन प्रणाली विकसित की गई है। अग्नि दुर्घटनाओं की सामयिक जानकारी प्राप्त करने हेतु फायर अलर्ट मेसेजिंग

सिस्टम विकसित की गई है। अतः जिले में वन संसाधनों के प्रबंधन व प्र्यावरण संरक्षण की दिषा में निरंतर सफलता पूर्वक प्रयास गतिमान है।

निष्कर्ष– बालाघाट जिला जलवायु वर्गीकरण की दृष्टि से भारत के 0 डिग्री अंक्षाष से 30 डिग्री दक्षिणी अक्षांष के बीच आता है। निष्चित तौर पर यहां पाये जाने वाले वन भी उष्ण कटिबंधीय वन कहलाते है। जिनका प्रबंधन व संरक्षण पर्यावरण सुरक्षा, बढते वैष्विक तापन, बढते ग्लेषियर, बढता समुद्र जल स्तर, बढता भू–स्खलन, भूमि की घटती उर्वरता, बाढ व सूखा जैसी समस्या के निदान हेतु जरूरी है। स्थूल दृष्किोण से पृथ्वी के भौतिक घटको स्थल, जल, वायू, मृदा को पर्यावरण का प्रतिनिधि माना जाता है क्योकि यह तत्व प्रत्येक स्थान पर मनुष्य को घेरे रहते है। किन्तु इनके अतिरिक्त और भी जैविक तत्व वन, पषु और जीवाणओं का भी मनुष्य पर प्रभाव परिलक्षित होता है। अतः वन संसाधन प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण के एक भौगोलिक अध्ययन में यदि मानव अपने आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र में उत्थान और प्रगति करता है और पर्यावरण के उक्त घटक अपने प्रकृतिक रूप में रहते है। तब उनसे चक्रिय अवस्था में व्यवधान नही आता है अथवा प्रकृति में संतुलन बना रहता है गुणवत्ता में कोई ह्रास नही होता है। तो कहा जाएगा कि पर्यावरण सुरक्षित करते हुए वहीं के लोग उन्नति कर रहे है। पर्यावरण का संरक्षण मावन, समाज एवं प्रकृति के बीच के संबंधों को अनुकूलतम बनाने के लिए आवष्यक है।

संदर्भ सूची–

1. डॉ नरेन्द्र मोहन अवस्थी, मध्यप्रदेष हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल

2. कुरूक्षेत्र पत्रिका

3. योजना पत्रिका

4. ‘‘मध्यप्रदेष का भूगोल‘‘ मध्यप्रदेष हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल

5 मासिक पत्रिका,. जनसंपर्क विभाग बालाघाट कार्यालय

6. रिपोर्ट, मध्यप्रदेष वन विभागा

7. मासिक पत्रिका, दक्षिण वन मंडल, बालाघाट